NH Debate – 44

“हरियाणा में सांगीत का साहित्य”

हरियाणा और पश्चिमी उत्तरप्रदेश में साठादि दशक तक सांग खूब होते रहे थे. जिन्होंनें वास्तव में ही इनकी प्रस्तुति को देखा और समझा था, उनके अलावा बाकी ने भी, जिनकी संख्या अच्छी खासी है, इन संगीत-नाटकों पर जम कर किताबे लिखीं. अर्थात मुख्या तौर पर गायन, 'ओकैजनल' नृत्य या यों कह लें कि उछल-कूद या मटके-लटके-झटके, के अतिरिक्त आख्यान ही इन संगीत-नाटकों या सांगीत की विशेषता होती थी. आज तो इसके चिन्ह मात्र ही बचे हैं.

जिन लोगों नें किताबें लिखीं उन्होंने सांगीत' की साहित्यिक विवेचना और विश्लेषण कर डाला. किसी ने यह नहीं सोचा कि 'संगीत नाटक' की साहित्यिक विवेचना करना इस विधा को समझने के लिये एक प्रकार की मौलिक त्रुटि है. इस विधा के साहित्यिक पक्ष का प्रलेखन करना तो आवश्यक था लेकिन साहित्यिक समीक्षा अथवा मूल्यांकन बिल्कुल अनुचित क्योंकि इस प्रकार से लीक डालने का बड़ा नुक्सान हुआ और हरियाणा की लोक-नाट्य कलाओं पर ठीक से प्रलेखन नहीं हो पाया. प्रख्यात नाट्यकर्मी हबीब तनवीर साहब ने इसे समझ लिया था और उन्होंनें एक-दो 'सांगीत' को देख-समझ कर इसकी तीन-चार तक चलने वाली प्रस्तुति को छोटा करके मात्र तीन घंटे तक प्रस्तुत की जाने वाली स्क्रिप्ट में समेट लिया. इसी के आधार पर प्रस्तुकरण हुआ तो लोगों, ख़ास तौर पर इस विधा के प्रेमियों और नागरिकों की समझ में बात आयी और इन्होनें हबीब साहब के कृत्य को माना और सराहा. लेकिन उनकी इस नवीनता (इनोवेशन) को हरियाणा में उचित मान और स्वीकार्यता नहीं मिली. वे अपने रास्ते और हरियाणा के 'सांगीत' बेड़े और जनता अपनी लीक पर चलते रहे. इससे सांगीतकों और बेड़ा-बंदों की आर्थिक हालत का सीधा सम्बन्ध था अर्थात यदि चार घंटे में चार दिन का शो समेट लिया तो, आमदनी जीरो. सांगीत में टिकट तो लगती नहीं थी. लोग स्वेच्छा से जो ईनाम देते उसी पर कलाकारों का जीवन-यापन और उनके दल का भविष्य निर्भर होता था.

खैर हरियाणा प्रदेश की इस विधा पर खूब पी-एच.डी हुयी और लोग प्रोफेसर के पद पर भी पहुँच गये लेकिन जिन सांगीतकों पर यह काम हुआ वे और उनके बहुत से साथी दरिद्रता के दर्शन करते हुये धीरे-धीरे भगवान् को प्यारे होते रहे. वास्तव में यह एक लोक नाट्य ही है जिसका मूल्यांकन नाट्य विधा के नियमों के अनुसार होना चाहिये था, न कि साहित्यिक समीक्षा और मूल्यांकन के नियमों के अनुसार. इसलिये जिन लोगों ने इस विधा पर साहित्यिक कृतियाँ प्रस्तुत की, उन सबकी समीक्षा न्याय सिरे से करने की जरूरत है और उनकी 'क्लासिफिकेशन' को बदलने की भी. लेकिन अमरीका और इंग्लैंड के जिन शोधार्थियों ने इन विधा पर अंडर और पोस्ट ग्रेजुएट रिसर्च कार्य किया, उन्होंनें ऐसी कोई गलती नहीं की. एकाध को छोड़ कर यहाँ के जो शोधार्थी 'लोक' विधाओं पर काम करते हैं उनमें और उनके पथ-प्रदर्शकों के नज़रिये में यह मुख्य कमी इसलिये रही कि भारत के प्राचीन मनीषियों और साहित्यिक मूल्यांकन कर्ताओं द्वारा प्रस्तुत अध्ययन

शैलियों और 'टूल्स' के बारे में उन्होंनें जानकारी ही नहीं जुटाई जबकि ये सब हमारे यहाँ विदेश में उपलब्ध टूल्स के मुकाबले में कही श्रेष्ठ हैं.

Ranbir Singh Phaugat

Nidana Heights

Dated: 14/09/14